

## कला में स्वतंत्रता

डॉ.भूपत इंडी\*

कला, मानव अभिव्यक्ति का एक ऐसा रूप है जो विचारों, भावनाओं और अनुभवों को रचनात्मक माध्यमों से प्रकट करती है – चाहे वह चित्रकला हो, संगीत, नृत्य, साहित्य, रंगमंच या मूर्तिकला। लेकिन जब बात “कला में स्वतंत्रता” की होती है, तो यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण और संवेदनशील विषय बन जाता है। कला की स्वतंत्रता का अर्थ है कलाकार को अपनी सोच, दृष्टिकोण और भावनाओं को बिना किसी बंधन या दबाव के प्रकट करने का अधिकार देना।

यह स्वतंत्रता न केवल कलाकार के लिए आवश्यक है, बल्कि एक स्वस्थ, प्रगतिशील और लोकतांत्रिक समाज के लिए भी अनिवार्य है। क्योंकि जहाँ कला स्वतंत्र होती है, वहाँ समाज में संवाद, प्रश्न, आत्मचिंतन और बदलाव की संभावना बढ़ती है।

### कला क्या है?

कला कोई सीमित परिभाषा में बंधी हुई वस्तु नहीं है। यह व्यक्ति की रचनात्मकता का प्रतिबिंब है, जो समाज, प्रकृति, भावनाओं, राजनीति, संस्कृति और आध्यात्मिकता – हर क्षेत्र से प्रेरणा लेती है। एक चित्रकार अपने चित्र के माध्यम से जो कहता है, वह एक लेखक अपने उपन्यास में और एक गायक अपने गीत में कहता है। इन सभी के पीछे मूल प्रेरणा “अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता” ही है।

### कला में स्वतंत्रता का अर्थ

कला में स्वतंत्रता का मतलब है:

- **विचारों की स्वतंत्रता:** कलाकार किसी विषय पर अपनी राय रख सके – चाहे वह राजनीतिक हो, धार्मिक हो, सामाजिक हो या व्यक्तिगत।
- **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता:** अपने विचारों को जिस माध्यम से चाहे, उसे प्रस्तुत करने की छूट हो।
- **सृजनात्मकता की स्वतंत्रता:** कलाकार अपनी कल्पना के अनुसार कुछ नया, अनूठा और प्रयोगात्मक रच सके।
- **प्रतिक्रिया की स्वतंत्रता:** कलाकार समाज की घटनाओं, समस्याओं, विडंबनाओं और संघर्षों पर टिप्पणी कर सके।

### कला में स्वतंत्रता क्यों आवश्यक है?

- **1. रचनात्मकता का विकास**

स्वतंत्रता के बिना कोई भी रचनात्मक कार्य संभव नहीं है। जब कलाकार को अपनी बात कहने में डर हो, तो उसकी सृजनात्मकता बाधित होती है।

- **2. समाज को आईना दिखाना**

कला अक्सर समाज के सच को सामने लाती है। कलाकार समय के अन्याय, असमानता, भ्रष्टाचार और अंधविश्वास के खिलाफ आवाज उठाता है। यदि वह स्वतंत्र नहीं होगा, तो ये आवाजें दब जाएँगी।

- **3. लोकतंत्र की मजबूती**

एक जीवंत लोकतंत्र में विचारों की विविधता और असहमति को स्थान देना ज़रूरी होता है। कला की स्वतंत्रता लोकतांत्रिक मूल्यों को मज़बूत करती है।

#### ○ 4. संवाद और आलोचना को बढ़ावा

कला प्रश्न उठाती है, बहस पैदा करती है, और समाज को सोचने पर मजबूर करती है। यह तभी संभव है जब कलाकार को बोलने की छूट हो।

#### कला की स्वतंत्रता पर खतरे

हाल के वर्षों में भारत और अन्य देशों में भी कला की स्वतंत्रता पर कई बार सवाल खड़े हुए हैं। कुछ मुख्य कारण:

- **राजनीतिक दबाव:** कलाकारों की रचनाओं को “देशविरोधी” या “राजनीति से प्रेरित” कहकर प्रतिबंधित कर देना।
- **धार्मिक भावनाओं का हवाला:** कई बार चित्र, फिल्में या नाटक धार्मिक भावनाओं को आहत करने के नाम पर रोके जाते हैं।
- **सामाजिक मीडिया ट्रोलिंग और धमकियाँ:** कलाकारों को सोशल मीडिया पर गालियाँ, धमकियाँ और बहिष्कार झेलना पड़ता है।
- **सेन्सरशिप (Censorship):** सरकार या संस्थान किसी रचना को प्रकाशित/प्रदर्शित होने से पहले संशोधित या रोक देते हैं।

#### उदाहरण:

- मंटो की कहानियाँ अपनी बेबाकी के कारण प्रतिबंधित की गईं।
- एम.एफ. हुसैन की चित्रकला को धार्मिक भावनाओं के नाम पर विवादों में घसीटा गया।
- फिल्मों पर बैन, रंगमंच पर रोक और किताबों को जलाया जाना भी कला की स्वतंत्रता पर हमले हैं।

#### कला और जिम्मेदारी

जहाँ कला को स्वतंत्रता मिलनी चाहिए, वहीं कलाकारों की भी कुछ सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारियाँ होती हैं। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का यह मतलब नहीं कि किसी समुदाय को जानबूझकर ठेस पहुँचाई जाए। एक संतुलन बनाए रखना ज़रूरी है जहाँ कलाकार संवेदनशील विषयों पर अपनी बात कहें, लेकिन उद्देश्य रचनात्मक आलोचना हो, न कि केवल उकसाना।

#### कानूनी परिप्रेक्ष्य में कला की स्वतंत्रता

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19(1)(a) के अंतर्गत प्रत्येक नागरिक को “अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता” का अधिकार है।

हालाँकि, अनुच्छेद 19(2) के अंतर्गत इस स्वतंत्रता पर कुछ “युक्तियुक्त प्रतिबंध” लगाए जा सकते हैं – जैसे कि:

- राष्ट्र की अखंडता और सुरक्षा

- सार्वजनिक व्यवस्था
- शालीनता या नैतिकता
- न्यायालय की अवमानना
- मानहानि या किसी की धार्मिक भावना को ठेस पहुँचाना

इसलिए कला की स्वतंत्रता पूर्णतः निरंकुश नहीं है, परंतु यह भी नहीं कि हर बार कलाकारों को चुप करा दिया जाए।

### **आधुनिक युग में डिजिटल कला और सोशल मीडिया की भूमिका**

आज कला केवल कैनवस, रंग या मंच तक सीमित नहीं है। डिजिटल प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया, यूट्यूब, इंस्टाग्राम आदि ने आम कलाकारों को भी अपनी आवाज़ उठाने का मंच दिया है। यह एक सकारात्मक परिवर्तन है, पर साथ ही साथ ट्रोलिंग, सेंसरशिप और ऑनलाइन नफरत की नई चुनौतियाँ भी लाई हैं।

कला में स्वतंत्रता एक जीवंत, जागरूक और सहिष्णु समाज की पहचान है। यदि कलाकारों को डर, दबाव या दमन में रहकर सृजन करना पड़े, तो समाज का सांस्कृतिक, बौद्धिक और नैतिक विकास रुक जाता है।

जहाँ विचारों की आज़ादी होती है, वहीं नवाचार जन्म लेता है। कला समाज का दर्पण है, और यह दर्पण तभी साफ़ रह सकता है जब उसे धुँधला करने की कोशिश न की जाए।

इसलिए आवश्यकता है कि हम एक ऐसे समाज का निर्माण करें जहाँ कला का सम्मान हो, संवाद को प्रोत्साहन मिले और भिन्न विचारों को स्थान मिले। क्योंकि जहाँ कला स्वतंत्र है, वहीं मनुष्य भी वास्तव में स्वतंत्र होता है।